"श्री जी साहिब जी मेहरबान"

कहनी छोड़िए रहनी में आइए

श्री प्राणाधार सुन्दरसाथ जी "प्रणाम जी"

श्री मुखवाणी में लिखा है

"बिन रहनी न मिले धनी"

कहनी सुननी गई रात में अब आया रहनी का दिन

प्यारे सुन्दरसाथ जी अब समय कहने और सुनने का नहीं है जो सुनना था वो श्री राजी के मुखारबिन्द से सुन लिया अब उसे कैसे रहनी में लाना है आज हमें सोचना है। यहां का एक पल जो धनी के बिना व्यतीत हो रहा है वह हम व्यर्थ में माया के झूठे सुखों के बदले गवां रहे हैं। आज हमें परमधाम में हमारे ऊपर होने वाली हंसी का जरा भी ध्यान नहीं है बल्कि हम तो माया में ही डूबते जा रहे हैं। अगर हम सुबह जल्दी उठ कर चितवन करते हैं और चितवन में वही परमधाम की इश्कमयी लीला जो श्री राजी महाराज हमेशा रूहों से करते हैं, नजर आती है जिसे आज दिन तक अक्षरब्रह्म नहीं जान सका कि परमधाम के अन्दर क्या होता है वह लीला हमें यहां माया के अन्दर नजर आती है लेकिन हम उस अखण्ड सुख को लेना नहीं चाहते, अगर चाहते भी हैं तो वो भी बिना कसनी किये बिना रहनी किए लेकिन माया के सुखो के लिए हम कसनी और रहनी को भी तैयार हैं। अगर फिल्म में तीन घंटे तक चुपचाप बैठने को कहां जाए तो वहां पर हम चुपचाप बैठे रहेंगे लेकिन चर्चा में कभी बातें करते हैं तो कभी आंख लग जाती है। लेकिन हमें ये नहीं सोचना चाहिए कि हम परमधाम की अंगना नहीं है अंगना तो हैं लेकिन हमारा जीव ही निकम्मा है जो हमारी रूह से ज्यादा बलशाली हुआ पड़ा है। हमारे लिए इस माया में वो वस्तुएं ज्यादा कीमती हैं जो हमें कुछ देर के लिए सुख देती हैं लेकिन वो कीमती नहीं जो हमें अखण्ड सुख देती हैं इस खेल में हमारे लिए सबसे ज्यादा कीमती सेवा है जो परमधाम में हमें नहीं मिलनी इसलिए हमें अपना कीमती वक्त सेवा में ही ज्यादा से ज्यादा बिताना चाहिए।

वाणी में लिखा है :-

"जिन सुध सेवा की नहीं, न कछु समझे बात
सो काहे को गिनावे आप साथ में जिन सुध न सुपन साख्यात"

सुन्दरसाथ की सेवा हमारे लिए बहुत कीमती है क्योंकि श्री राजी महाराज हमारे साथ इस माया में आए हैं उनका स्थान सुन्दरसाथ का दिल है सुन्दरसाथ के दिलों को ही श्री राजी ने अपना अर्श बनाया है अगर हम सुन्दरसाथ दिन में दो घड़ी भी प्यार से बोल लें तो समझ लो श्री राजी महाराज से ही बात हो गई, हम सब सुन्दरसाथ एक ही धनी के हैं चाहे वह अमीर हैं चाहे वह गरीब हैं अगर हम आपस में लड़ बैठे तो धनी को कितना दुख होगा इसका अन्दाजा हम नहीं लगा सकते हमें राजी को दिया हुआ कौल याद रखना है वो ये कि हम एक हो कर रहेंगी हम आप को कभी

Nijanand App

नहीं भूलेंगी।

अब जो घड़ी रहो साथ चरणे हो, रहियो तुम रेणु समान
इत जागे को फल एही है, चेन लीजो कोई चतुर सुजान

अब हमारी नजर हमेशा श्री श्यामा जी के अंग सुन्दरसाथ पर हो : सुन्दरसाथ के दिलों में ही श्री राजी की बैठक है और सुन्दरसाथ के साथ बैठकर वाणी मंथन करें : धनी की अखण्ड वाणी से जब हमें मूल घर परमधाम की पूरी पहचान हो जाती है तो आत्म धनी के विरह में तड़पती है इसी विरहा में हमारा जीव शुद्ध हो जाता है और हम श्री राजी के चरणों में पहुँच जाते हैं! अन्त में यही कहूंगा कि हमें माया के झूठे कबीलो में फालतू बातों में समय नहीं गवाना चाहिए : सरकार श्री ने हमें उस अखण्ड सुखों को बता दिया जो हमने कभी सपने में भी नहीं सोचे थे।

दीपक निजानन्दी
फाज़िल्का

संवेदना सन्देश

समस्त सुन्दरसाथ में यह हृदय विदारक समाचार भारी मन से पढ़ा जायगा कि हमारे आदर्णीय सुन्दरसाथ श्रीमती कृष्णा कुमारी-श्री मधू सूदन जी मलहोत्रा, नूर महल (पंजाब) का एक मात्र पुत्र साढ़े अठारह वर्ष की जवानी भरी उम्र में वात्सल्य व ममता के सारे मोह पाश तोड़कर दिनांक २६ जून २००१ को धाम-सिधार गया। मामूली उल्टियों का बहाना बना और जवान बेटे को हाथों में लिये पिता बड़े से बड़े डाक्टर की चौखट पर दस्तक देता रह गया और माता पिता की आंखों के तारे व लाडले पुत्र प्रिय योगेश ने अन्तिम प्रणाम कर सदैव के लिये विदा ले ली। सरकारश्री के प्रति समर्पित मोनू ने श्री निजानन्द आश्रम रतनपुरी व हमारे अन्य उत्सवों में अपने मधुर सदव्यवहार व सेवा से हम सब के दिलों को जीत लिया और जाते-जाते भी पूज्यपाद धर्मवीर के स्मृति भवन व जागनी रतम्भ में श्रमदान कर अपने थोड़े पर अर्थपूर्ण जीवन को सार्थक बना गया। रक्षा बन्धन व भइया दूज के पावन त्योहार प्रिय बहनों श्रीमती अनीता एवं सुनीता को बहुत रूलायेंगे।

धाम-दर्शन, निजानन्द आश्रम रतनपुरी व जागनी अभियान गुजरात परिवार श्री मधू सूदन व समस्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट करते हैं व धाम-धनी से प्रार्थना करते हैं कि वह प्रिय योगेश (मोनू) की आत्मा को निज चरणों में स्थान दें और परिवार को इस महान दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

धामदर्शन

Nijanand App